Executive Summary
(Hindi)

Proposed Drug Intermediates Manufacturing Plant
by
M/s R. P. Intermediates
at
Village - Shernagar, District - Muzaffarnagar (Uttar Pradesh)

Submitted to:
R. P. Intermediates

August 2010

Prepared by:

Eqms

EQMS India Pvt. Ltd.

304 & 305, Rishabh Corporate Tower, Plot No. 16,
Community Centre, Karkardooma, Delhi - 110092
Phone: 011-30003200 - 30003218; Fax: 011 - 22374662
Email: eqms@eqmsindia.org; URL: www.eqmsindia.com

कार्यकारी सारांश

पृष्ठभूमि और अध्ययन का उद्देश्य

मैसर्स आर. पी. इंटरमीडिएट्स ने मुज़फ्फरनगर में एक छोटे पैमाने पर दवा उद्योग के लिए उपयोग में आने वाले मध्यवर्ती कच्चे माल की विनिर्माण सुविधा की स्थापना का प्रस्ताव किया है. यह उद्योग जानसठ रोड पर राणा पेपर मिल के निकट स्थापित किया जायेगा. इसके लिए जमीन का अधिग्रहण किया जा चुका है. प्रस्तावित मध्यवर्ती कच्चे माल एल - बेस, डी-बेस, क्लोरोफेनिकोल पावडर और क्लोरोफेनिकोल पाल्मीटेट हैं. इनका उपयोग दवा उद्योगों में कच्चे माल के रूप में किया जाता है और दवा उद्योगों की संख्या जनता में दवाओं की भारी मांग की वजह से दिन ब दिन बढ़ रही है. जनसंख्या में वृद्धि भी इन मांगों में सहायक है. दवा इकाइयों की एक बड़ी संख्या उत्तराखंड राज्य में भी है और वहां भी प्रस्तावित कच्चे माल की मांग है.

परियोजना विवरण

प्रस्तावित मध्यवर्ती औषध उद्योग में एल - बेस, डी-बेस, क्लोरोफेनिकोल पावडर और क्लोरोफेनिकोल पाल्मीटेट का निर्माण किया जायेगा जो कि दवा उद्योगों में मध्यवर्ती कच्चे माल के रूप में उपयोग किये जाते हैं और जनता के द्वारा दवाओं की भारी मांग की वजह से दवा उद्योगों की संख्या दिन ब दिन बढ़ रही है.

भूमि की आवश्यकता

परियोजना प्रस्तावक ने वर्ष २००१ में ०.१७९ हैक्टेयर भूमि खरीदी थी जिसमें भूमि के निष्पादन का काम २००१ में किया गया था. जिसकी खरीद घोषणा यू / एस 143 के अंतर्गत जिला अदालत से २००१ में प्राप्त की गयी थी.

कच्चे माल की आवश्यकता

उद्योग के लिए आवश्यक कच्चे माल की एक सूची निम्न तालिका में प्रस्तुत है.

कच्चा माल	मात्रा / महीना
एस बेस	२००० किलोग्राम
एचसीएल	18 किलोग्राम
NaOH	60 किलोग्राम
M.D.C.A	434 किलोग्राम
सक्रिय कार्बन पाउडर	48 किलोग्राम
एसीटोन	480 किलोग्राम
Pyridine	50 किलोग्राम
Palmitoyl Chloride	164 किलोग्राम

पानी की आवश्यकता

परियोजना के लिए पानी का स्रोत नलकूप है जिसे यूनिट के परिसर में स्थापित किया जाएगा. यह अनुमान है कि परियोजना प्रक्रिया के लिए अधिकतम प्रतिदिन २०० लीटर पानी की आवश्यकता होगी, इसके एक हिस्से का पुनर्नवीनीकरण किया जाएगा. इसके अलावा घरेलू पानी की आवश्यकता लगभग २.० किलोलीटर प्रतिदिन होगी.

बिजली की आवश्यकता

प्रस्तावित परियोजना के कार्य के लिए 30 केवीए का बिजली लोड आवश्यक है. प्रस्तावक पहले से ही कनेक्शन के लिए राज्य बिजली बोर्ड में आवेदन कर चुका है.

परियोजना में 30 केवीए क्षमता का एक डीजी सेट स्थापित किया जाएगा. डीजी सेट में एचएसडी की खपत प्रति दिन 25-30 लीटर के आसपास होगी. डीजी सेट केवल ग्रिड बिजली की अनुपलब्धता के दौरान उपयोग किया जायेगा.

परियोजना प्रक्रिया के लिए भाप की आवश्यकता पूरी करने के लिए २० किलोग्राम प्रति घंटे भाप उत्पादन क्षमता का एक लघु बॉयलर लगाया जायेगा, जो की डीजल ईंधन पर आधारित होगा. डीजल की दैनिक खपत प्रति दिन 40-50 लीटर के आसपास होगी.

जनशक्ति की आवश्यकता

जनशक्ति की आवश्यकता का विवरण निम्नलिखित तालिका में दिया गया है.

कार्मिकों की संख्या	9
प्रति पाली कार्य घंटे	8
प्रति दिन कार्य पालियां	1
प्रति वर्ष कार्य दिवसों की संख्या	300

प्रदूषण के श्रोत और नियंत्रण

वायु प्रदूषण

प्रस्तावित इकाई से मुख्य वायु प्रदूषण श्रोत बेबी बॉयलर और डीजल जनरेटर सेट हैं. बेबी बॉयलर २० किलोग्राम प्रति घंटे भाप उत्पादन क्षमता का होगा, जो की डीजल ईंधन पर आधारित होगा. बॉयलर की चिमनी छत के ऊपर 10 मीटर ऊँची होगी. डीजी सेट से कोई वायु प्रदूषण नहीं होगी क्योंकि OEM घटक के रूप में उत्प्रेरक कनवर्टर से इसे सुसज्जित किया जाएगा तथा चिमनी की ऊंचाई छत के ऊपर २ मीटर होगी. जो पार्टिकुलेट पदार्थ, SO2 और NOx के वातावरण में फैलाव में सहायक होगी.

जल प्रदूषण

इकाई से उत्पन्न कुल जल अपशिष्ट का स्तर २०० लीटर से अधिक नहीं होगा, जिसका इलाज साईट में स्थापित किये जाने वाले ETP में किया जायेगा. उपचारित पानी को पास के नाले में छोड़ा जायेगा. गाद को गाद सुखाने के संयंत्र में सुखाया जायेगा, जिसे समय - समय पर केक के रूप में निस्तारित किया जायेगा. घरेलु अपशिष्ट को प्रक्रिया से उत्पन्न अपशिष्ट के साथ मिश्रित नहीं किया जायेगा और इसके लिए अलग से सेप्टिक टैंक तथा सोख गड्ढे प्रदान किये जायेंगे.

शोर प्रदूषण

प्रस्तावित इकाई से शोर प्रदूषण के मुख्य स्रोत डीजी सेट, बॉयलर और rotating उपकरण होंगे. डीजी सेट को एक बंद कक्ष में रखा जायेगा जिसमें ताजा हवा के लिए प्रावधान होगा. बॉयलर की धौंकनी और सभी घूर्णन उपकरणों को कंपन पैकिंग पर रखा जाएगा.

अपशिष्ट उत्पादन

संयंत्र परिचालन से उत्पन्न से उत्पन्न ठोस और खतरनाक कचरे को परिसंकटमय अपशिष्ट (प्रबंधन, हथालन और सीमापार संचलन) नियम, 2008 के अनुसार चार अलग अलग श्रेणियों में रखा गया है. कंपनी खतरनाक / ठोस कचरे के प्रत्येक प्रकार के भंडारण के लिए पर्याप्त अलग भंडारण क्षेत्र प्रदान करेगी. खतरनाक अपशिष्ट भंडारण क्षेत्र में आरसीसी फर्श और छत का कवर रखा जायेगा, जो उसे वर्षा के जल से मिश्रित होने से बचाएगा. एक leachate संग्रह प्रणाली leachate के संग्रहण तथा उपचार और निपटान के लिए प्रदान की जाएगी.

पर्यावरण का विवरण

आधारभूत प्राथमिक पर्यावरण का अध्ययन वर्ष २०१० की गर्मियों के मौसम (मार्च से जून) के दौरान आयोजित किया गया और उसका विवरण निम्नानुसार है:

साइट परिवेश

परियोजना स्थल शेर नगर गाँव में राज्य राजमार्ग 12 ए (जानसठ रोड), मुज़फ्फरनगर पर मुज़फ्फरनगर और जानसठ के बीच स्थित है, परियोजना स्थल की स्तिथि २९ २५' २८.१२" उ अक्षांश तथा ७७ ४५' ३३.४४" पू देशांतर पर है. परियोजना क्षेत्र औद्योगिक, अर्द्ध शहरी तथा ग्रामीण पर्यावरण का मिश्रण है.

तलरूप एवं भूविज्ञान

अध्ययन क्षेत्र जलोढ़ बेल्ट का हिस्सा है जो Undifferentiated quarternary अवसादन का बना हुआ है. इसमें मुख्यरूप से कंकर के साथ रेत और मिट्टी का समावेश है. रेत बेड अत्यधिक समृद्ध aquifers बनाते हैं. क्षेत्र का औसत ढल १/५ मीटर/ किलोमीटर है जो कि दक्षिण पश्चिम दिशा में है. औसत ऊंचाई समुद्र स्तर से ऊपर २४५ मीटर से २६० मीटर के बीच है. हालांकि, परियोजना स्थल और परिवेश की ऊंचाई २४२ से २४८ मीटर के बीच है.

जलवायु

अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से चार मौसम होते हैं - ग्रीष्मकालीन मौसम (मध्य मार्च - जून); मानसून (जुलाई - मध्य सितंबर); पोस्ट-मानसून (मध्य सितंबर - नवम्बर) और शीतकाल (दिसम्बर - फरवरी). यह एक subtropical जलवायु वाला क्षेत्र है, जिसकी विशेषता उच्च तापमान, कम नमी तथा अल्प वर्षा है.

माइक्रो मौसम

आईएमडी से एकत्र आंकड़ों के अनुसार, अगस्त सबसे नम तथा अप्रैल सबसे सुखा महिना होता है. अध्ययन के क्षेत्र में अधिकतम वर्षा अगस्त के महीने में होती है. आईएमडी से एकत्र आंकड़ों के अनुसार, मई सबसे गर्म तथा जनवरी सबसे ठंडा महिना होता है. अध्ययन के क्षेत्र में मई और जनवरी का औसत तापमान ३५.४ तथा ५.८ डिग्री सेंटीग्रेट रहता है. औसत हवा पैटर्न के विश्लेषण के अनुसार हवा आवृत्तियों W, WSW, WNW और NW दिशाओं में क्रमशः ९.७५%, १०.१%, ८.०३% और ८.१५% हैं. शांत वातावरण कुल समय का 18.08% है. औसत अध्ययन क्षेत्र की हवा की गति 2.73 मीटर/ सेकंड है.

मिट्टी अभिलक्षण

प्रस्तावित अध्ययन क्षेत्र की मिट्टी की गुणवत्ता को तलरूप, वनस्पति और चट्टान बहुत ही सीमित हद तक प्रभावित करती हैं. हालांकि, मिट्टी की प्रोफ़ाइल में बदलाव क्षेत्रीय जलवायु की विविधता की वजह से बहुत स्पष्ट हैं. इस क्षेत्र की मिट्टी अर्द्ध शुष्क जलवायु के तहत विकसित है. उप बफर क्षेत्र की सतह में विभिन्न अनुपात में रेत, गाद, मिट्टी और कंकर का समावेश है. उत्तर प्रदेश के जिलों में इसकी विशेषता गंगा की मिट्टी का हिस्सा है, जबकि यमुना नगर, अंबाला, पटियाला और लुधियाना में इन सतह पर गैर-कल्करेऔस, दोमट और रेतीले हैं, और गहराई में दोमट मिट्टी है.
अध्ययन के क्षेत्र में मिट्टी के नमूने परियोजना स्थल और उसके आसपास के क्षेत्रों से मिटटी की गुणवत्ता की जांच के लिए एकत्र किए गए. परियोजना स्थल से एकत्र नमूने रंग में भूरे हैं तथा रेतीली चिकनी बलुई मिटटी को निर्दिष्ट करते हैं.

भूमि का उपयोग

अध्ययन क्षेत्र में प्रचलित भू-उपयोग कृषि है (६१,७३%). बाकी भूमि पर या तो पार्टी जमीन है या मानव बस्तियां हैं. क्षेत्र में मिटटी मध्यम और उच्च उर्वरता का मिश्रण है. मध्यम उर्वरता की जमीन एक फसल और उच्च उर्वरता की जमीन दो फसलों के लिए उपयुक्त है. क्षेत्र के मुख्य कृषि उत्पाद अनाज (गेहूं, जौ, चना, चावल, मक्का), गन्ना, तिलहन, और आलू हैं. रबी और खरीफ दोनों फसलें क्षेत्र में बोई जाती हैं.

जल पर्यावरण

प्रस्तावित परियोजना स्थल ऊपरी गंगा बेसिन में स्थित है जो कि मुज़फ्फरनगर में गोमती नदी के संगम के ऊपर है. बेसिन में प्रवाह काफी हद तक दक्षिण-पश्चिम मानसून हवाओं (जून - सितम्बर) और गर्म मौसम (अप्रैल - जून) में हिमालय की पिघलने वाली बर्फ पर निर्भर है. बंगाल की खाड़ी से उत्पन्न उष्णकटिबंधीय चक्रवात जून और अक्टूबर के बीच बेसिन में

पानी के प्रवाह में योगदान देता है.
भूजल, सिंचाई, घरेलू और औद्योगिक उपयोग के लिए पानी की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है. यह सालाना भरने वाला संसाधन है, परन्तु इसकी उपलब्धता स्थान और समय के साथ बदलती है. परियोजना क्षेत्र चतुर्धातुक अवसादों के द्वारा बना है जिसमें विभिन्न ग्रेड की रेत, क्ले और कंकर है. केन्द्रीय भूजल प्राधिकरण (सीजीडब्ल्यूए) के द्वारा विभिन्न जिलों में किये गए भूजल सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार भू-जल का स्तर १० - ४० मीटर है.
अध्ययन क्षेत्र के पानी की गुणवत्ता निर्धारित करने के लिए सतही और भूजल के नमूने लिए गए तथा उनका बाद में विश्लेषण किया गया. भूजल के नमूने ६ स्थानों से लिए गए (परियोजना स्थल, भंदूर, निराना, संधाव्ली, धन्दारा और नई मंडी). भूजल का pH स्तर ७.१५-७.४४ है तथा TDS १४६ - ३७४ है. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र के भूमिगत जल की गुणवत्ता अच्छी है और पीने के लिए उपयुक्त हैं.
सतही पानी के नमूने 3 स्थानों से अध्ययन अवधि के दौरान एकत्र किए गए थे और भौतिक रसायन मानकों के लिए विश्लेषण किया गया. नमूने धांधरा-दतियाना, ऊपरी गंगा नहर और मखियाली शाखा से लिए गए थे. मुजफ्फरनगर मुख्य नाली में कठोरता, भंग ठोस, COD और Coliforms मानक से अधिक पाए गए. ऊपरी गंगा नहर और मखियाली शाखा के पानी की गुणवत्ता अनुमेय सीमा से थोड़ा अधिक है.

वायु पर्यावरण

अध्ययन क्षेत्र के वायु गुणवत्ता स्थापना के लिए हवा के नमूने मार्च, अप्रैल और मई, २०१० में लिए गए. अध्ययन के क्षेत्र में प्रदूषण के मुख्य स्रोत औद्योगिक और वाहन उत्सर्जन, पक्की और कच्ची सतहों से निलंबित धुल, घरेलू आवश्यकताओं के लिए जलने वाला ईंधन और हवा के साथ खुली कृषि एवं बंजर भूमि से उड़ने वाली धुल हैं. हवा के नमूने छह स्थानों से लिए गए (परियोजना स्थल, निराना, संध्वाली, धांधरा, भंदुर, नई मंडी). उच्चतम PM2.५ स्तर परियोजना स्थल (70.4 µg/m3) में पाया गया, जबकि निम्नतम स्तर मुजफ्फरनगर टाउन (20.3 µg/m3) की नई मंडी में पाया गया. PM10 स्तर 54.0 से लेकर162.0 µg/m3 पाए गए. उच्चतम स्तर परियोजना स्थल (162.0 µg/m3), जबकि सबसे कम स्तर नई मंडी (54.0 µg/m3) में पाया गया था. SO2 के उच्चतम स्तर को परियोजना स्थल (25.4 µg/m3) जबकि निम्नतम स्तर भंदुर (6.6 µg/m3) में पाया गया था. अध्ययन क्षेत्र के SOx स्तर NAAQS मानक (80 µg/m3) के अन्दर पाए गए. NOx के उच्चतम स्तर नई मंडी (38.2 µg/m3) जबकि निम्नतम स्तर संधाव्ली (14.4 µg/m3) में पाया गया था. अध्ययन क्षेत्र के NOx स्तर NAAQS मानक (80 µg/m3) के अन्दर पाए गए. HC के उच्चतम स्तर परियोजना स्थल (425.0 µg/m3) और निम्नतम स्तर धन्दारा (160.0 µg/m3) में पाए गए थे सभी स्थानों पर सीओ का स्तर मानकों के अनुमेय स्तर (2000 µg/m3) के भीतर पाए गए. उच्चतम स्तर परियोजना स्थल (940.0 µg/m3) और निम्नतम स्तर धन्दारा (400.0 µg/m3) में पाया गया था.

शोर पर्यावरण

शोर निगरानी सात स्थानों पर की गयी (परियोजना स्थल के पास, एसएच 12a (जानसठ रोड), निराना, भंदौर, धन्धेरा, संधाव्ली और कम्बल वाला बाग़). निगरानी के परिणाम भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना मानक राजपत्र ६४३ के तहत निर्धारित स्तर के अनुरूप जांचे गए. परियोजना स्थल औद्योगिक क्षेत्र में पड़ता है और सभी स्थानों पर शोर के स्तर परिवेश शोर मानकों के भीतर पाए गए थे. अधिकतम ध्वनि स्तर दिन और रात में एसएच -12 ए के पास पाए गए. अन्य स्थानों में भी शोर का स्तर राजमार्ग की निकटता की वजह से उच्च स्तर पर पाए गए.

जैविक पर्यावरण

अध्ययन के क्षेत्र में कोई भी संवेदनशील पारिस्थितिकी स्थल नहीं है.

सामाजिक आर्थिक पर्यावरण

10 किलोमीटर अध्ययन क्षेत्र में मुख्य रूप से मुजफ्फरनगर जिले के मुज़फ्फरनगर और जानसठ उप जिले में पड़ते है. वहां अध्ययन क्षेत्र में कुल 29 गाँव, जिसमें 10 गांवों जानसठ उप जिला में और 19 गांव मुजफ्फरनगर उप जिला में हैं. भारत की जनगणना-२००१ के अनुसार, अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या 495843 है और कुल घरों की संख्या ७६८७२ है. ग्रामीण जनसंख्या 33.11% और शहरी जनसंख्या 66.89% है. अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या में 262578 पुरुष और 233265 महिला है. अध्ययन क्षेत्र की साक्षरता दर 57.85% है. अध्ययन के क्षेत्र में पुरुष और महिला साक्षरता दर का वितरण क्रमशः 64.18% और 50.73% है. ७२% लोग गैर श्रमिक श्रेणी के हैं.

प्रत्याशित पर्यावरणीय प्रभाव

निर्माण चरण के दौरान

प्रस्तावित इकाई की स्थापना के लिए सभी निर्माण कार्य वर्ष 2001 में पूरे कर लिए गए थे. परियोजना के कार्यान्वयन के लिए अब परियोजना में शामिल गतिविधियां मशीनरी और प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों की स्थापना और हरित पट्टी का विकास हैं.

ऑपरेशन के चरण के दौरान संभावित प्रभाव

प्रस्तावित परियोजना से संभावित महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभावों वायु पर्यावरण, जल पर्यावरण, भूमि पर्यावरण सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण से संबध होंगे.

ठोस अपशिष्ट और भूमि पर प्रभाव

कुल भूखंड (१७९० वर्ग मीटर) के आधे भाग का संयंत्र के लिए निर्माण किया जा चुका है. मौजूदा शेष भाग खली है, जिसकी परिधि में वृक्षारोपण के साथ हरी घास लगायी गयी है. संयंत्र के आपरेशन के कारण भूमि पर कोई प्रतिकूल प्रभाव की परिकल्पना नहीं की गई है.

संयंत्र के ऑपरेशन से उत्पन्न ठोस और खतरनाक कचरे में प्रयुक्त तेल, ETP गाद, रसायन और पैकेजिंग में प्रयुक्त कंटेनर और घरेलू ठोस अपशिष्ट हैं. संयंत्र परिचालन से उत्पन्न से ठोस और खतरनाक कचरे को परिसंकटमय अपशिष्ट (प्रबंधन, हथालन और सीमापार संचलन) नियम, 2008 के अनुसार निस्तारित किया जायेगा. प्रस्तावित परियोजना से उत्पन्न इस्तेमाल तेल को बैरल में एकत्र किया जाएगा और उसे UPPCB/ CPCB द्वारा अधिकृत recyclers को बेच दिया जाएगा.

वायु गुणवत्ता पर प्रभाव

संयंत्र के आपरेशन के कारण प्रदूषण के मुख्य स्रोत २० किलोग्राम/ घंटे की क्षमता का बेबी बॉयलर और ३० केवीए क्षमता का डीजल जनरेटर सेट हैं. इसके अतिरिक्त कुछ प्रक्रिया उत्सर्जन रिएक्टरों से होगा, जिसके लिए उचित वेंटिलेशन प्रणाली प्रदान की गई है. प्रमुख प्रदूषकों बॉयलर और डीजी सेट से उत्सर्जित वायु प्रदूषण NOx, SO2 और PM के रूप में होगा. बेबी बॉयलर और डीजी सेट संयंत्र के उत्सर्जन के कारण जमीनी स्तर पर सांद्रता की भविष्यवाणी ISCST-3 मॉडल के द्वारा किया गया. अधिकतम NOx, SOx और PM के जमीनी स्तर सांद्रता का स्तर पश्चिम दिशा में २०० मीटर की दूरी पर पाया गया है और अधिकतम सांद्रता 0.05µg/m3 0.21µg/m3, 0.31µg/m3 पायी गयी, इसलिए यह कहा जा सकता है कि प्रस्तावित परियोजना के कारण वायु पर्यावरण पर प्रभाव नगण्य है.

शोर के स्तर पर प्रभाव

सभी शोर पैदा करने के श्रोतों को ध्यान में रखते हुए अधिकतम शोर के स्तर की भविष्यवाणी की गयी है. इसके अनुसार, श्रोत के निकट अधिकतम ध्वनि का स्तर 80 डीबी (ए) होगा और यह स्पष्ट है कि शोर का स्तर १०० मीटर की दूरी पर 40 डीबी (ए) के स्तर तक चला जायेगा. मौजूदा परियोजना स्थल के पास शोर का स्तर 45 से 56 डीबी (ए) के दायरे में हैं. इसलिए, भविष्य के पर्यावरण पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा. प्रस्तावित संयंत्र एक सामान्य पाली में ही चलाया जायेगा और संयंत्र से रात में किसी भी प्रकार का शोर नहीं जनित होगा. इसलिए, संयंत्र के ऑपरेशन के कारण आसपास के क्षेत्रों के निवासियों पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा.

जल पर्यावरण पर प्रभाव

तरल अपशिष्ट प्रक्रिया से, उपकरण धोने से, फर्श धोने से और घरेलु उपयोग से जनित होंगे. यह अनुमान है कि परियोजना के संचालन के चरण के दौरान घरेलू और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए कुल 0.5 KLD पानी की आवश्यकता होगी. औद्योगिक तरल अपशिष्ट 0.2 KLD और घरेलू तरल अपशिष्ट 0.२४ KLD होगा. शेष पानी या तो प्रक्रियाओं में उपयोग किया जाएगा या सूख जायेगा. सभी औद्योगिक अपशिष्ट का उपचार एक ETP में किया जाएगा. उससे उत्पन्नं अपशिष्ट बागवानी प्रयोजनों के लिए उपयोग किया जाएगा. गाद को गाद सुखाने के संयंत्र में सुखाया जायेगा, जिसे समय - समय पर केक के रूप में निस्तारित किया जायेगा. घरेलू शौचालयों से उत्पन्न अपशिष्ट, प्रवाह संयंत्र के साथ मिश्रित नहीं किया जाएगा. एक अलग सेप्टिक टैंक के साथ यह सोख गड्ढे में उपचार के लिए प्रदान किया जाएगा.

सामाजिक, आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव

पप्रस्तावित दवा मध्यवर्ती परियोजना का क्षेत्र के औद्योगिक विकास पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा, क्यूंकि मुजफ्फरनगर में तथा पास के उत्तराखंड राज्य में कई सारी दवा इकाइयाँ हैं. यह अनुमान है कि ऑपरेशन के चरण के दौरान, प्रस्तावित परियोजना से 10 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होगा. इसके अलावा, इस परियोजना से आकस्मिक काम के माध्यम से अप्रत्यक्ष लाभ के लिए भी कुछ अवसर उत्पन्न होंगे जो कि उप अनुबंध, परिवहन, व्यापार आदि के क्षेत्र में होंगे.

पारिस्थितिकी और जैव विविधता पर प्रभाव

परियोजना गतिविधि के दौरान पेड़ काटने या भूमि समाशोधन की आवश्यकता नहीं है. इसके अलावा, अध्ययन क्षेत्र में कोई भी पारिस्थितिकी संवेदनशील स्थान नहीं है. इसलिए, इस संयंत्र की गतिविधियों से पारिस्थितिकी और जैव विविधता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने की उम्मीद है.

पर्यावरण प्रबंधन योजना

पर्यावरण प्रबंधन योजना (EMP) का उद्देश्य प्रस्तावित परियोजना से संभावित पर्यावरणीय प्रभावों के स्तर को कम करने के लिए है. EMP परियोजना प्रबंधन की पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रतिबद्धता को दर्शाता है.

निर्माण चरण

परियोजना के सभी सिविल निर्माण कार्य पहले ही वर्ष 2001 में पूरा कर लिए गए थे. हालांकि, मशीनरी और प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों की स्थापना अभी की जानी है. इस चरण के दौरान कोई भी महत्वपूर्ण पर्यावरणीय प्रभाव की सम्भावना नहीं है, जिसके लिए किसी अतिरिक्त पर्यावरण प्रबंधन योजना की आवश्यकता हो.

ऑपरेशन चरण

वायु पर्यावरण

प्रस्तावित संयंत्र में, २ चिमनियाँ होंगी जो कि एक बेबी बॉयलर और एक डीजी सेट से सम्बद्ध होंगी. डीजी सेट ग्रिड से बिजली की विफलता के दौरान ही इस्तेमाल किया जाएगा. इसके अलावा, संयंत्र का आपरेशन एक दिन में केवल एक ही पाली में होगा. परियोजना स्थल मानव बस्तियों से दूर है. हरियाली के लिए फैक्टरी परिसर की सीमा के साथ मध्यम ऊंचाई के पेड़ों की एक पट्टी बनायीं जाएगी. कुल हरित पट्टी परियोजना स्थल के २०% क्षेत्र में होगी. इसके अलावा परिसर में लॉन और फूलों के बगीचे भी होंगे.

शोर का स्तर

संयंत्र सीमा पर तथा परियोजना स्थल के पास के आवासीय क्षेत्रों में राष्ट्रीय सांविधिक शोर के स्तर मानकों के अनुरूप होंगे. सभी नए संयंत्र उपकरणों का चयन कम शोर के स्तर के विनिर्देशन के साथ किया जाएगा. शोर बाड़ों, बफ़र्स, और / या सुरक्षात्मक उपाय का उपयोग शोर के स्तर को व्यावसायिक जोखिम सीमा के भीतर रखने के लिए किया जायेगा. (जहाँ शोर का स्तर ८ घंटे प्रतिदिन में ९० dB(A) से अधिक हो).

जल पर्यावरण

प्रस्तावित परियोजना में, अधिकतम पानी की आवश्यकता 2.7 KLD है. परियोजना के कारण भूमि या सतह के पानी पर कोई प्रभाव नहीं परिकल्पित है इसलिए किसी शमन उपाय की आवश्यकता नहीं है. हालांकि, इलाज के पानी को हरित पट्टी विकास के लिए और वर्षा के जल को संचयन के लिए उपयोग में लाने का परियोजना में प्रस्ताव है.
प्रस्तावित परियोजना से उत्पन्न अपशिष्ट को ETP में शोधित किया जायेगा और उसकी गुणवत्ता वर्षा के जल के अनुरूप ही होगी. वर्षा जल संचयन और रिचार्जिंग परियोजना भी प्रस्तावित है. 1 पुनर्भरण संरचना का निर्माण इसके लिए किया जायेगा और सभी नालियों का उत्प्रवाह इस साईट पर ही भेजा जायेगा. संभावित स्थान का निर्धारण लेआउट के अनुसार किया जाएगा.

भूमि पर्यावरण

उत्पन्न ठोस अपशिष्ट, पैकेजिंग अपशिष्ट और जैविक कचरे आदि को अलग से एकत्र किया जायेगा और निस्तारित किया

जायेगा. ETP गाद और incinerable कचरे को अभेद्य जमीन पर पॉलिथीन में / एचडीपीई बैग या ड्रम में अस्थायी रूप से संग्रहीत किया जायेगा और अंतिम निपटान के लिए पहले से निर्दिष्ट स्थान पर भेजा जायेगा.

पर्यावरण निगरानी कार्यक्रम

एक अच्छी तरह से परिभाषित पर्यावरण निगरानी कार्यक्रम, EMC के प्रशिक्षित और योग्य कर्मचारियों के साथ नियोजित किया जाएगा. परिवेशी वायु की निगरानी के लिए गैस गुणवत्ता की जांच चिमनियों पर और तरल अपशिष्ट की जांच उत्सर्जन क्षेत्र पर की जानी चाहिए. गैस गुणवत्ता और तरल अपशिष्ट गुणवत्ता की जांच यह जानने में सहायक होगी की गुणवत्ता अनुमेय सीमाओं के भीतर है या नहीं.